देशों के बीच मधुर सम्बन्धों में कई प्रयास किए हैं और हाल ही में भारत व पाकिस्तान के बीच विदेश सचिव स्तर की वार्ता में दोनों देशों के बीच शिमला समझौते 1972 (Simla Agreement 1972) के आधार पर सम्बन्धों को मधुर बनाने की बात स्वीकार की गई है। परन्तु यह तो समय ही बता सकता है कि भारत को पाकिस्तान से अपनी सुरक्षा को लेकर चिन्तित होना चाहिए या आश्वस्त। इसके विपरीत 1997 के बाद भारत-चीन सम्बन्धों में आए सुधार के कारण भारत को चीन से उतना खतरा नहीं रहा, जितना पाकिस्तान से। मई 2004 मे चीन द्वारा सिक्किम को भारत का अभिन्न अंग मान लिये जाने से भारत-चीन सम्बन्धों की खाई कम हो गई है। इसलिए अब भारत की सुरक्षा व्यवस्था को चीन की बजाय पाकिस्तान से ही अधिक खतरा रह गया है। परन्तु फिर भी हमें चीन के प्रति भी अपनी सुरक्षा व्यवस्था को लेकर आवश्यकता से अत्यधिक आशावान या किसी पूर्वाग्रह से मुक्त नहीं रहना चाहिये जैसा 1962 से पहले रहे थे।

पाकिस्तान तथा चीन की तरह हिन्द महासागर का घटनाक्रम भी भारत की सुरक्षा के लिए गम्भीर चुनौती रहा है। 1960 के दशक में इस क्षेत्र में अमेरिका द्वारा डियागो गार्शिया द्वीप पर अपना परमाणु शक्ति से युक्त हवाई अड्डा स्थापित करने से भारत की चिन्ताएं बढ़ने लगी और उसके बाद सोवियत संघ, चीन, फ्रांस, जापान व आस्ट्रेलिया आदि देशों द्वारा भी इस क्षेत्र के सैन्यकरण से यह स्थिति अधिक गम्भीर हुई। भारत का अधिकतर व्यापार इसी क्षेत्र से होता है। इस क्षेत्र में भारत का जल क्षेत्र 12 समुद्री मील है। सामरिक द ष्टि से महत्वपूर्ण यह क्षेत्र सैन्यकरण के कारण भारत की सुरक्षा को गम्भीर चुनौती पैदा कर रहा है। 1992 में चीन द्वारा म्यांमार के बसीन नदी के मुहाने पर स्थित हियांगी द्वीप पर नौसैनिक अड्डे का निर्माण करने में म्यामांर की मदद करने तथा अकयाब, मदगुई व ग्रेट कोको टापू के अड्डों का आधुनिकीकरण करने में उसकी मदद करने से भारत की चिन्ताएं और अधिक बढ़ गई हैं। इनमें से ग्रेट कोको टापू का हवाई अड्डा तो केवलमात्र 30 समुद्रीमी है जो सामरिक द ष्टि से भारत की सुरक्षा के लिए खतरा हो सकता है।

इसके साथ-साथ मध्य एशिया का क्षेत्र व दक्षिण-पूर्व एशिया का क्षेत्र भी आर्थिक व सामरिक द ष्टि से भारत के लिए आकर्षण का केन्द रहा है। खाड़ी देशों का घटनाक्रम भी बार-बार भारत की सुरक्षा नीति पर प्रभाव डालता रहा है। इन देशों में प्रचूर मात्रा में मिलने वाले खनिज पदार्थ, तेल, गैस व अन्य पैट्रोलियम पदार्थ भारत के आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। इसी कारण भारत खाड़ी देशों के साथ अच्छे सम्बन्ध कायम रखने के प्रयास करता रहा है। वस्तुतः भारत की विदेश नीति इजराइल समर्थक होने के साथ-साथ अरब-समर्थक भी रही है। पाकिस्तान को छोड़कर अन्य किसी मुस्लिम राष्ट्र के साथ भारत के सम्बन्ध खराब नहीं हुए हैं। भारत के इन देशों के इस्लामिक बम्ब से हमेशा खतरा बना रहता है। यदि कभी इन देशों ने इस्लामिक कट्टरवाद का प्रयोग किया तो पाकिस्तान को इसका पूरा लाभ होगा और इससे भारत की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न होने में कोई गुंजाईश शेष नहीं रहेगी। इस दशक में ईराक तथा अफगानिस्तान के घटनाक्रम से भारत का चिन्तित होना स्वाभाविक ही है। परन्त क्षेत्रीय परिवेश के सन्दर्भ में भारत की सुरक्षा नीति के बारे में सुखद पहलु यह है कि 'ASEAN' के मंच पर उभरता आर्थिक सहयोग व सुरक्षा व्यवस्था की बढ़ती विश्वसनीयता इस बात की द्योतक है कि दक्षिण पूर्व एशिया के देशों से भारत की सुरक्षा व्यवस्था को कोई गम्भीर खतरा नहीं है।

(III) अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश व भारत की सुरक्षा नीति

(International Environment and India's Security Policy)

भारत की सुरक्षा व्यवस्था पर अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम का भी व्यापक प्रभाव पड़ा है। 1962 में चीनी आक्रमण तथा 1965, 1971 तथा 1999 में भारत-पाक युद्धों ने भी भारत की सुरक्षा नीति को प्रभावित किया है। 1965 में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा पाकिस्तान का समर्थन और 1971 के युद्ध में भी और अधिक समर्थन, भारत की सुरक्षा के लिए एक गम्भीर चुनौती थी। 1979 में अफगानिस्तान

में सोवियत हस्तक्षेप, अमेरिका द्वारा हिन्द महासागर के डियागो गार्शिया द्वीप पर परमाणु युक्त हवाई अड्डे का निर्माण करने व वियतनाम में अमेरिकी हस्तक्षेप से भी भारत की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हुआ था। इसके अतिरिक्त स्वेज नहर संकट, कांगो विवाद, कोरिया संकट तथा NATO, SEATO तथा CENTO आदि सैनिक गठबन्धनों ने भी भारत की सुरक्षा व्यवस्था के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में खतरा उत्पन्न किया। पाकिस्तान का संगठनों का सदस्य होने के कारण भारत को पाकिस्तान की तरफ से हमेशा ही राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर चिन्ता बनी रही है। आतंकवाद का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप भी वर्तमान समय में भारत की सुरक्षा व्यवस्था को चुनौती दे रहा है। इसके साथ-साथ महाशक्तियों द्वारा परमाणु अप्रसार व परमाणु निःशस्त्रीकरण के बारे में अपनाए गए भेदभावपूर्ण द ष्टिकोण के कारण भी भारत की सुरक्षा व्यवस्था के सामने गम्भीर संकट आ गया है। अब भारत यह सोचने को मजबूर हो गया है कि वह अपनी परमाणु नीति व परमाणु अप्रसार कार्यक्रमों में तालमेल कैसे बिठाए। इसी कारण भारत ने आज तक NPT तथा CTBT (Nuclear Non-Proliferation Treaty and Comprehensive Test Ban Treaty) पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। 1991 के बाद शीतयुद्ध के अन्त व सोवियत संघ के विघटन ने भारत के सामने अपनी सुरक्षा व्यवस्था को लेकर जो चिन्ताएं खड़ी हुई थी, उनका समाधान तो भारत ने 1998 में परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनकर कर लिया, परन्तु बदले हुए अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में वह अपनी सुरक्षा को लेकर आज भी चिन्तित है। वस्तुतः भारत की सुरक्षा व्यवस्था को आज भी पाकिस्तान व चीन की मैत्री, पाक-अमेरिकी सैन्य गठबन्धन व हिन्द महासागर में बढ़ता सैन्य हस्तक्षेप के सन्दर्भ में खतरा दिखाई देता है। इसलिए आज भारत को अपनी सुरक्षा नीति को सुद ढ़ बनाने के लिए अमेरिका, पाकिस्तान व चीन सहित सभी राष्ट्रों से मधुर व सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों के विकास के लिए नई विदेश नीति अपनाने की आवश्यकता है और ऐसे ही प्रयास भारत कर रहा है।